VISION IAS

www.visionias.in

VISION IAS
M N 06 AUG 2023 No. 3
RECEIVED

2319.

ESSAY

Name of Candidate	Ishwar lal Gurjar						Test Code	2023		
Medium Hindi/Eng.	Hindi	Registration Number	1	2	9	5	8	1	8	
Centre	MN.	Date	6	—	0	8	—	2	3	

INDEX TABLE

Section	Maximum Marks	Marks Obtained
A	125	
B	125	
Total Marks Obtained:		

Important Instructions

1. The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

   प्रवेश–पत्र में प्राधिकृत माध्यम में **निबन्ध** लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न–सह–उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों पर अंक नहीं दिए जाएंगे।

2. Word limit, as specified, should be adhered to.

   प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द–संख्या के अनुसार होने चाहिए।

3. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

   प्रश्न–सह–उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ भाग को पूर्णतः काट दीजिए।

Remarks:

General Instructions

1. Do furnish the appropriate details in the answer sheet (viz. Name, Registration Number and Test Code).

   उत्तर पुस्तिका में सूचनाएं भरना आवश्यक है (नाम, प्रश्न–पत्र कोड, विद्यार्थी क्रमांक इत्यादि)।

2. Write **two** essay, choosing **one** topic from each of the Sections A and B, in about 1000-1200 words each.

   खण्ड A व B प्रत्येक से **एक** विषय चुनकर **दो** निबन्ध लिखिए, जो प्रत्येक लगभग 1000–2000 शब्दों का हो।

3. Do not write answers in bad of illegible handwriting. Such answer may not be evaluated.

   उत्तर अस्पष्ट अथवा गन्दी लिखावट में न लिखें। इस प्रकार के उत्तरों का मूल्यांकन नहीं भी किया जा सकता है।

4. Write answers in ink only. Do not use pencil for writing the answer. However, pencil may be used for drawing diagrams, sketches, etc.

   उत्तर स्याही से ही लिखें। उत्तर लिखने के लिए पेंसिल का उपयोग न करें। हालांकि आरेख, चित्र इत्यादि बनाने के लिए पेंसिल का उपयोग किया जा सकता है।

5. Do not write answers in a medium other than the authorized medium in the Admission Certificate. Do not use mixed language, i.e., authorized and unauthorized media together, for writing answers.

   प्रवेश–पत्र में उल्लेख किए गए माध्यम के अलावा अन्य किसी माध्यम में उत्तर न लिखें। अधिकृत और अनधिकृत की मिली–जुली भाषा का भी उपयोग न करें।

6. Write answers at the specified spaces (right below the questions) only. Answers written elsewhere at unspecified spaces in the Booklet shall not be evaluated.

   प्रश्नों के उत्तर ठीक उसके नीचे दिए गए निर्धारित स्थान पर ही लिखें निर्धारित स्थान के अलावा किसी अन्य स्थान पर लिखे गए उत्तर का मूल्यांकन नहीं किया जाएगा।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

EVALUATION INDICATORS

1. **Contextual Competence**
2. **Structure and Flow**
3. **Dimensional Coverage**
4. **Language Competence**
5. **Length of Essays**
6. **Creativity Competence**

Overall Macro Comments / feedback / suggestions on Answer Booklet:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Evaluation Parameters

- Understanding of Topic
- Introduction Competence
- Body of Essay
  - Dimensions Covered
  - Shortcomings
  - Value Additions/ Missed Dimensions
- Conclusion Competence
- Organization of Essay
- Language and Expression

Macro Comments – Essay 1

Essay Topic:

– हम केवल यह जान सकते है कि हम कुछ भी नहीं जानते हैं। और यह मानव बुद्धिमता का उच्चतम स्तर है।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Macro Comments – Essay 2

Essay Topic:

Students must not write on this page.
उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

Students must not write on this page.

उम्मीदवारों को इस पृष्ठ पर नहीं लिखना चाहिए।

All the Best

"हम केवल यह जान सकते है कि हम कुछ भी नहीं जानते है। और यह मानव बुद्धिमता का उच्चतम स्तर है।"

महान संगम कवि 'अव्वैयार' ने लिखा है कि "हम जो जानते है वह धूल के कण के बराबर है, लेकिन जो हम नहीं जानते है, वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के बराबर है"

ऐसा ही दावा ग्रीक दार्शनिक 'सुकरात' भी करते है– "मैं इस अर्थ में ज्ञानी हूं कि मैं जानता हूं कि मैं कुछ भी नहीं जानता।"

यही बात 'रहीम' अपने दोहो में कह रहे है कि– "रहिमन बात अगम्य की कहन सुनन की नाहिं
जानत है सो कहत नहीं; कहत है सो जानत नहीं"

प्रश्न यह उठता है कि यह सब ज्ञानी, विचारक और साहित्यकार अपनी अज्ञानता का दावा क्यों कर रहे है? क्या मनुष्य के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

ज्ञात ज्ञान की कोई महत्ता नहीं? क्या मानवता ने अथाह वैज्ञानिक और तात्विक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लिया है?

इन सभी प्रश्नों के माध्यम से समझने का प्रयास करते हैं कि अज्ञानता की घोषणा और ज्ञान के प्रति मानवता कि जिज्ञासा; कैसा मानव बुद्धिमता का उच्चतम स्तर साबित होती है।

ध्यातव्य हो कि मनुष्य सभ्यता की सारी भौतिक, सामाजिक, वैज्ञानिक प्रगति अपने अज्ञान की प्रगतिशील खोज के कारण ही संभव हो पायी। 'पाषाणकाल' से लेकर 'परमाणु युग' तक; वन गुफाओं से लेकर अंतरिक्ष बस्तियों तक का सफ़र मनुष्य ने जिज्ञासा के बलबूते ही तय किया है। एक अर्थ में आधुनिक सभ्यता मनुष्य के अज्ञान की ही

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

खोज का परिणाम है।

सोचो यदि आदि-मानव सभ्यता के हमारे पूर्वजों ने आग, चाक, पहियें, अनाज, सुरक्षा के उपकरण, औषधियों की खोज न कि होती तो आज हम मामुली वानरों से दुनिया की सर्वाधिक प्रबुद्ध प्रजाति न बन पाते।

विज्ञान का कोई भी अविष्कार इस पूर्वमान्यता पर आधारित होता है कि यह तब तक ही सत्य है जब तक कि इसे नए प्रमाणों और नई खोज से खारिज नहीं कर दिया जाता। 'न्यूटन' की क्लासिकल फिज़िक्स के कंधों पर खड़े हो कर 'आंइस्टिन' ने अपने सापेक्षता के सिद्धान्त की खोज की और आज परमाणु के भीतर 'क्वांटम फिजिक्स' से मनुष्य फेर-बदल कर सम्पूर्ण भौतिकी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के नियमों को ही नए सिरे से खोज और समझ रहा है। 'गैलीलियो' की जिज्ञासा ने 'खगोल विज्ञान' की नई नींव रखी तो वॉटसन ने भाप के इंजन की खोज अपने अधूरे ज्ञान की पूर्णता के क्रम में ही की।

आज जैव प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, एज कम्प्यूटिंग, बिग डेटा और रोबोटिक्स के माध्यम से न केवल 'AI ह्यूमन' की रचना संभव हो पाई है बल्कि जीवन को भी पुनः रचने का प्रयास किया जा रहा है।

"21 lesson for 21th century" के लेखक डॉ. युवाल नोआ हरारी के अनुसार "मृत्यु अब एक तकनीकी समस्या मात्र है।" मनुष्य अमरता को बहुत जल्दी प्राप्त कर

लेगा।

न केवल विज्ञान के क्षेत्र में बल्कि समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति, कृषि, प्रशासन, मनोविज्ञान, साहित्य में भी मानवता ने जो भी प्रगति की है; वह अपने अज्ञान की खोज में किए गए प्रयासों का ही परिणाम है।

जे. एस. मिल ने कहा है कि "एक संतुष्ट सुअर होने से अच्छा एक असंतुष्ट मनुष्य होना है।" असंतुष्टि और जिज्ञासा नई राहों की खोज के लिए जरूरी है। अपने तात्कालिक युग के कर्मकाण्ड धार्मिक आडम्बरों से असंतुष्ट हो कर ही बुद्ध, महावीर स्वामी, पैगंबरों एवं सूफियों ने प्रेम और सत्य जैसे वास्तविक मूल्यों को पहचाना और उनका प्रसार किया।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भारतीय संस्कृति "वादे वादे जायते तत्वबोधः" के माध्यम से जिज्ञासा के लिए अधिक से अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित करती रही है। कुछ भी नहीं जानने का ज्ञान व्यक्ति को उदार, सहिष्णु, निर्मल और अभिमान से रहित बनाता है। महोपनिषद में कहा भी गया है कि - "विद्या ददाति विनयम्"

ज्ञान के शिखर पर मौन का निवास होता है। जो जान जाता है कि मेरा ज्ञान धूल के कण के बराबर ही है; अभी और बहुत कुछ जानना है; वह अपने अधूरे ज्ञान का बखान नहीं करता। वह दूसरों के विचारों के प्रति अधिक सहिष्णु हो जाता है। जैन दर्शन में स्यादवाद के माध्यम से ज्ञान की सापेक्षता के सिद्धान्त को समझाने का प्रयास [छः जन्मांध व्यक्तियों

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की कहानी के माध्यम से समझाया जाता है। जैन स्यादवाद के अनुसार मनुष्य अपनी सीमित बुद्धि से एक ही वस्तु के सभी गुणों को नहीं जान सकता है इसलिए उसे अपने ज्ञान के ही सत्य होने का दावा नहीं करना चाहिए।

ध्यान से देखे तो हम पाते है कि अपने अज्ञान को स्वीकार करना ही मनुष्य की बुद्धिमता का उच्चतम स्तर है। इससे विकास और अन्वेषण की नई राहें तो खुलती ही है साथ ही यह सोच व्यक्ति को अन्य पक्षों, विचारों के प्रति अधिक विनम्र और सहिष्णु बनाती है।

दूसरी तरफ जो व्यक्ति अपने सत्य को ही अंतिम मानता है। अपने ज्ञान और मान्यताओं को ही ब्रह्माण्ड

का अंतिम सत्य मानने की हठ धर्मिता है। वह असहिष्णु, रूढ़िवादी और जड़ हो जाता है। समय परिवर्तनशील है परिवर्तन प्रकृति का नियम है। प्रकृति और ब्रह्माण्ड में मनुष्य बहुत ही छोटा स्थान रखता है। इसलिए मनुष्य को अपने आप को प्रकृति का केन्द्र मानने की भूल भी नहीं करनी चाहिए और न ही अपनी विचारधारा, मान्यता के अंतिम होने का दावा करना चाहिए।

'थोथा चना बाजे घना' और आधजल गगरी छलकत जाय" जैसे मुहावरे अधूरे ज्ञान का दावा करने वाले व्यक्ति पर चरितार्थ होती है। ठहरा हुआ पानी जिस तरह से सड़ जाता है वैसे ही परिवर्तन विरोधी मानसिकता किसी भी समाज और राष्ट्र के चरित्र को भी जड़ एवं

रूढ़िवादी बना सकती है। मध्यकालीन यूरोप का सामंतवादी समाज इसी का उदाहरण है। धर्म अपनी ही रूढ़ मान्यताओं को अंतिम मानकर समाज को अंधकार के युग में जकड़े रहा। मनुष्य की जिज्ञासा के कारण ही खोज के युग, पुनर्जागरण, औद्योगिक क्रांति का सूत्रपात हुआ और आज यूरोप सर्वाधिक उदार व समृद्ध समाज में से एक है।

वर्तमान में बढ़ता कट्टरपन, संरक्षणवादी नजरिया, रूढ़िवाद, आक्रामकता और आतंकवाद व्यक्ति के अहंकार, व्यक्तिवाद, और अज्ञान का परिणाम है। अपने धर्म, क्षेत्र, राष्ट्र के प्रति अंधआस्था के कारण समुदायवाद और सहिष्णुता की भावना कमजोर होती है।

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

लोक प्रशासन में सुधारवादी दृष्टिकोण और जन सहभागीता को अधिकतम करने के लिए यह जरूरी है कि लोक सेवक अपने ज्ञान और नियमों को ही अंतिम सत्य मानकर न बैठे। उन्हें जनता से फीडबैक, सिविल सोसायटी से सहयोग, निजी क्षेत्र से कौशल प्रबंधन जैसे इनपुट को ग्रहण करना चाहिए ताकि प्रशासन को अधिक जनमित्र, कुशल एवं नैतिक बनाया जा सके।

शासन में सिटीजन चार्टर, सहभागी बजट, RTI, लोक सेवा गारंटी अधिनियम, ई-गवर्नेंस जैसे समावेश इसी दृष्टिकोण का प्रतिबिम्बित्व करते है कि अभी हमे कल्याणकारी राज्य के रूप में एक लम्बा सफ़र तय करना है इसलिए सीखने के लिए; नवाचार को अपनाने के

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए।

व्यक्ति के स्तर में अपने अज्ञान की स्वीकृति 21वीं सदी के तकनीकी युग में बेहद जरूरी है क्योंकि Alvin अपनी किताब फ्यूचर शॉक में लिखते है कि "21वीं सदी का निरक्षर वह नहीं है जो पढ़-लिख नहीं सकता बल्कि वह है जो सीख नहीं सकता, सीखा हुआ भूल नहीं सकता (unlearn) और पुनः नया सीख नहीं सकता (Relearn)।

औद्योगिक क्रांति 4.0 में मशीन लर्निंग, AI, 3डी प्रिंटिंग, ऑटोमेशन और रोबोटिक्स जैसी तकनीकों का कौशल प्राप्त करके ही कोई व्यक्ति और देश आर्थिक विकास को प्राप्त कर सकता है।

इस बात में कोई ~~संशय~~ संशय नहीं है कि मनुष्यता ने एक लंबा सफ़र तय किया है; लेकिन अभी और बहुत कुछ करना बाकी है। भविष्य में जलवायु परिवर्तन, वैश्विक खाद्य सुरक्षा, अंतरिक्ष अन्वेषण, प्राकृतिक आपदाओं जैसी बहुआयामी चुनौतियों का सामना करने के लिए मनुष्य को अपने अन्वेषण की प्रगतिशील खोज जारी रखनी होगी।

"गहन सघन मनमोहक वन तरु
हमको आज बुलाते हैं।
किन्तु किये जो वादे हमने
याद हमें वह आते हैं।
अभी कहा आराम बदा यह मूक निमंत्रण छलना है
और अभी तो मीलों हमको; मीलों हमको
चलना है"

"वहां मत जाओ जहां रास्ता ले जाए,
बल्कि वहां जाओ जहां कोई रास्ता नहीं है
और अपने निशान छोड़ जाओ।"

"वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या
जिस पथ पर बिखरे शूल ना हो
नाविक की धैर्य परीक्षा क्या
जब धाराएँ ही प्रतिकूल ना हो"

हिन्दी के भाववादी कवि 'हरिवंशराय बच्चन' की यह काव्य पंक्तियाँ हमे प्रतिकूल और विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का संदेश देती है।

भीड़ का हिस्सा होना भीड़ होना है। भीड़ का कोई व्यक्तित्व नहीं होता। अधिकांश लोग भीड़ में ही जन्म लेते है और भीड़ का ही हिस्सा बनकर जीवन गुजार देते है। लेकिन कुछ लोग बने-बनाये रास्तों पर चलना पसंद नहीं करते; उन्हें लीक

लकीर का फकीर बनना स्वीकार नहीं होता। इसलिए वह अपनी राहें स्वंय चुनते है। समाज के द्वारा बताये गए रास्ते जोखिमो और कठिनाइयां से तो सुरक्षित होते है लेकिन उनकी मंजिल भी भीड़ में पहुँचकर खो जाती है।

"कुछ वो लोग जो वक्त के सांचो में ढल गए
कुछ वह जो वक्त के सांचे ही बदल गए"

वक्त के सांचे बदलने वाले; अपने बनाए रास्तो पर चलने वाले लोग हम अपने आस-पास जीवन के हर क्षेत्र मे देख सकते है।

एक लड़का जिसे रेलवे में साधारण टिकट कलेक्टर (TT) बनना मंजूर नहीं था। उसने अपनी लगन और मेहनत से अपना रास्ता स्वंय बनाया

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

और उसने भारतीय क्रिकेट टीम को अपनी कप्तानी में 2011 का वर्ल्डकप जीतवाया। मे। महेन्द्र सिंह धोनी ने सम्पूर्ण खेल जगत में कैप्टन कूल के रूप में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। ऐसे ही निख्त जरीन, मीराबाई चानू, मैरीकॉम, नीरज चोपडा, देवेन्द्र झांझडियां जैसे दर्जनों नाम है जिन्होंने "खेलोगे कूदोगे होओगे खराब; पढोगे लिखोगे बनोगे नवाब" कहावत को ही उलट दिया।

राष्ट्रीय कवि रामधारी सिंह दिनकर का गहरा विश्वास था कि मनुष्य भोक्ता नहीं कर्ता है। वह अपनी किस्मत स्वयं अपने भुजबल से बनाता है। ~~अतः~~ उन्होंने लिखा भी है कि—

Don't write anything this margin
(इस भाग में कुछ ना लिखें)

~~है कौन विघ्न ऐसा टिक सके मानव के मग~~

"है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके जो मानव के मग में
खम ठोक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़"

इसी को चरितार्थ करते हुए 'दशरथ मांझी' (मांउटेनमैन) ने अपनी लगन और मेहनत से 360 फीट चौड़े पहाड़ को काटकर रास्ता बना दिया; जिससे उनके गांव तक पहुँच ~~आसान~~ आसान हो सके।

'जादव पायेंग' ने अकेले 550 हेक्टर का जंगल उगा दिया। डॉ. अंकुशात्री चन्द्रशेखरन ने 3.15 लाख नेत्रहीन लोगों की निःशुल्क चिकित्सा सेवा कर आँखों की रोशनी लौटाने

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

का अनुकरणीय कार्य किया।

चिकित्सा का क्षेत्र जो आज एक लाभ कमाने का व्यवसाय बन गया है वहीं 'डॉ. रतनचन्द कर' ने अपना आधा जीवन अंडमान-निकोबार द्वीप पर आदिम जनजाति 'जारवा' को विलुप्त होने से बचाने के लिए उनकी चिकित्सा सेवा की। उन्होंने पूरे द्वीप पर जारवा का डॉक्टर सम्मान से पुकारा जाता है।

अकाल और भूखमरी से जूझते भारत में हरित क्रांति के सपने को साकार करने वाले "एस. एम. स्वामीनाथन' हो या अमूल एवं अन्य 30 सहकारी संगठनों की स्थापना करने वाले श्वेत क्रांति के जनक डॉ. वर्गीज

कुरियन हो या फिर भारत को मिसाइल प्रौद्योगिकी से आत्मनिर्भर बनाने वाले डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम हो। यह सब वह नाम है जिन्होंने नए रास्तों की खोज की और इतिहास में ~~अमर हो~~ अपने पर चिह्न छोड़े।

विज्ञान के ही क्षेत्र में - न्यूटन, वॉटसन, एडीसन, मैडम क्यूरी, आइंस्टीन, होमी जहांगीर भाभा, स्टिफन हॉकिंस जैसे नाम नई राह के ~~अन्वेषी~~ अन्वेषी हो।

नेल्सन मंडेला ने अपनी किताब 'लॉन्ग वॉक टू द फ्रीडम' में लिखा है कि "जीवन का गौरव कभी न गिरने में नहीं है बल्कि ~~गिरकर~~ हर बार गिरकर उठने में है" इसी तरह उन्होंने भी

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जीवन में अनेक अभावों और प्रताड़नाओं का सामना करने के बाद अपने देश और समुदाय को स्वतंत्रता का नया प्रकाश दिलाने में कामयाब रहे।

राजनीति में जहाँ दादा भाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, गोपालकृष्ण गोखले, तिलक और गांधी जी जैसे राजनेताओं ने भारत को स्वतंत्र कराने के लिए एक वैचारिक संघर्ष किया वहीं भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद और अशफाक उल्ला खां जैसे सैकड़ों क्रांतिकारियों ने आत्म बलिदान की नई राह चुनकर देश-प्रेम की मिशाल पेश की।

सामाजिक और धार्मिक क्षेत्र में नई रोशनी प्रज्ज्वलित करने वालों में बुद्ध, महावीर, ईसा, पैगंबर, हजरत जैसे धर्म प्रवर्तकों का स्थान है तो वहीं मार्टिन लूथर, कबीर, राजा राम मोहन राय, ईश्वरचन्द विद्यासागर

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

मदर टेरेसा, विवेकानंद जैसे सुधारकों का भी स्थान है।

मानवता का सम्पूर्ण विकास नए रास्तों की खोज करने वाले साहसी मुसाफिरों, योद्धाओं, व्यापारियों और धर्म प्रचारकों के कारण ही सम्पन्न हुआ। अफ्रीका से निकलकर चाँद तक का सफ़र जोखिम लेने के साहस का ही परिणाम है।

कृषि क्रांति, वैज्ञानिक क्रांति और औद्योगिक क्रांति ने आधुनिक विश्व को आकार दिया है। इन क्रांतियों के पीछे असंख्य किसानों, नरवादों, वैज्ञानिकों, प्रशासकों और दार्शनिकों का योगदान है जिन्होंने अपने समय से आगे बढ़कर मानवता के लिए सोचा। और मानव सभ्यता की दशा और दिशा बदलने का काम किया।

'प्रशासन' में लकीर का फकीर बनने की प्रवृत्ति के कारण ही लालफीताशाही भ्रष्टाचार, लाट साहब/कल्चर, क्रोनी कैपिटलिज्म अपराधीकरण, रूल बुक ब्यूरोक्रेसी जैसी प्रगतिविरोधी मानसिकता का जन्म हुआ। लेकिन कुछ सिविल सेवकों ने सेवा के प्रति समर्पण और सकारात्मक अभिवृत्ति के कारण नए प्रतिमान गढ़ने का काम किया-

'T.N. शेषन' (CEC) ने चुनाव सुधारों के माध्यम से भारतीय राजनीति की गुणवत्ता को सुधारने के लिए साहसिक कदम उठाए। 'प्रकाश सिंह' (IPS) ने भारतीय पुलिस व्यवस्था में सुधारों के लिए एक लंबी न्यायिक लड़ाई लड़ी। डॉ. सुमित शर्मा ने महंगी दवाओं के अवैध बाजार

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

की जगह जैनरिक दवाओं के प्रसार को बढ़ावा दिया। 'परमेश्वर अय्यर' ने अपनी प्रतिबद्धता से भारत स्वच्छ मिशन को एक जन आन्दोलन का रूप दिया।

प्रशासन में लगातार होते सुधार, ई-गवर्नेंस, जनमित्र शासन के माध्यम से सिविल सेवकों को मिशन कर्मयोगी' के तहत Rule Based से Role Based नौकरशाही की तरफ ले जाने का प्रयास भी नई राहों की खोज का ही एक प्रयास है।

राष्ट्र के स्तर पर भारत का 2047 तक विकसित देश बनने का सपना, जन कल्याण से जग कल्याण का संकल्प, Life मिशन और पंचामृत मिशन

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

जैसी पहल भविष्योन्मुखी ज्ञान आधारित महाशक्ति बनने के संकल्प का ही प्रयास है।

पर्यावरण और प्रकृति के सन्दर्भ में 'ग्रेटा थुनबर्ग' का स्ट्राइक फ़ॉर फ़्यूचर हो या ~~जादव~~ विजय जरधारी का बीज बचाओ आन्दोलन हो या तुलसी गौंड व राही बाई सोमा की सामुदायिक परिस्थिति हो यह सब प्रयास एक सतत धारणीय दुनिया बनाने के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोलने के ही प्रयास है।

अतः यह कहना कि बने-बनाये रास्तों पर चलने की बजाय नए रास्तों की खोज करनी चाहिए; ~~बहुत है एक कल्पना~~

Don't write anything this margin (इस भाग में कुछ ना लिखें)

भविष्य और अतीत रवीन्द्रनाथ टैगोर के इस कथन का अनुकरण ही है—

"जोदि तोर डाक सुन केउ ना आसे तब एकला चलो रे!"

पंजाबी के कवि बाबा फरीद ने भी अपनी रचनाओं में व्यक्ति को रूढ़ियों, जड़ताओं और पुरानी मान्यताओं की बेड़ियों को छोड़कर दुनिया में नई संभावनाओं की खोज में निकलने का आह्वान किया है—

" उठ फरीदा सुता तू दुनिया वेखण जा
जे कोई मिल पावे बख्शिया ते तू भी बख्शिया जा
कुरिया कुरिया जा फरीदा कुरीया कुरीया जा"

SPACE FOR ROUGH WORK

SPACE FOR ROUGH WORK

SPACE FOR ROUGH WORK